**UDAYAN**

**Volume: 1**
**Issue: 1 (July-December) 2026**
**Page No.: 12-18**

# भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा में समावेश

**प्रो० डॉ० चंदन कुमार पंकज**
**प्राचार्य**
**उदय मेमोरियल बी० एड० कॉलेज, केदल, रांची**

**"वाणी की वर्षा, अदाओं का फुहार,**
**इंटरनेट की किरणें, कुशलता की बौछार**
**चंदन की अनुभूति, श्रोताओं का प्यार**
**मुबारक हो आपको भारतीय ज्ञान परंपरा का विस्तार"**

शिक्षा किसी भी देश के लिए सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है जो उसे अपनी पूर्ण मानव क्षमता प्राप्त करने, एक समान और न्यायपूर्ण समाज विकसित करने और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने में सक्षम बनाती है। शिक्षा अध्यापन से छात्रों में आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान के दृष्टिकोण को विकसित करना चाहिए जिससे शिक्षा को और अधिक अनुभव आत्मक और मनोरंजन बनाया जा सके। विश्व भर में शिक्षा क्षेत्र में हाल ही में तेजी से हुई वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के कारण कार्यक्रम संरचना और परिणाम में परिवर्तन होते हुए देखा है। भारत में इसके जनसंख्या की लाभ प्राप्त करने और देश की प्रतिभा और संसाधनों को बढ़ाने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच पर ध्यान देने की आवश्यकता है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उपयुक्त दिशा में एक उल्लेखनीय कदम है क्योंकि यह प्राचीन भारतीय ज्ञान, ज्ञान और शक्ति के दर्शन और विचार पर विकसित हुई है।

''भारतीय ज्ञान परंपरा की विश्व दृष्टि में मनुष्य को सृष्टि का स्वामी नहीं अपितु न्यायसी माना जाता है। मनुष्य भी चराचर में तमाम जीवित प्राणियों के बीच महज एक प्राणी ही है। इसलिए यह मानव – केंद्रित नहीं अपितु चराचर– केंद्रित विश्व दृष्टि है। इस विश्व दृष्टि में मनुष्य की अवधारणा 'प्रकृतिजयी' रूप में अवधारित न होकर 'आत्मजयी' रूप में सरकार हुई है।"

भारत उपासना ऋषियों की भूमि, मानव जाति का पालना, भाषा की जन्मस्थली, इतिहास की माता, पुराने की दादी, परंपराओं की परदादी है। मनुष्य के इतिहास में जो भी मूल्यवान एवं सृजनशील सामग्री है इसका भंडारण अकेले भारत में है।

इस तरह की समुन्नत एवं संपन्न भारतीय दर्शन एवं संस्कृति में सभी बातों की देशकाल सापेक्ष व्याख्याएं होती रही है। इसी संकल्पना को साथ–साथ पर हमारे ऋषि मुनियों संतो ने समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के आवश्यकता अनुसार वृष्टि करके सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दृष्टि से शब्दबद्ध करके आधारभूत ग्रंथों का निर्माण किया है। चार वेद, 18 पुराण, 108 उपनिषद, रामायण, महाभारत, जैनो के आगम ग्रंथ, बौद्ध के त्रिपिटक, सिखों के गुरु ग्रंथ साहिब आदि, यह सब भारतीय ज्ञान परंपरा का आधारभूत साहित्य है। इसी के प्रकाश में समय–समय पर विभिन्न विषयों पर आधुनिक विद्वानों महापुरुषों ने भी कार्य किए हैं। इनका साहित्य भी उपलब्ध है। यह प्रमाण भारतीय ज्ञान परंपरा की व्यापकता को दर्शाते हैं, जो पूर्ण रूप से वैज्ञानिक सनातन और सर्वस्पर्शी है।

आज वैश्विक स्तर पर सर्वसम्मति से योग दिवस की स्वीकृति इसका प्रमाण है। वर्तमान में मनुष्य के स्वास्थ्य विशेष करके मानसिक तनाव एवं आवश्यकता का समाधान योग के द्वारा प्राप्त हो रहा है, परंतु भारत में तो सहर्ष वर्षों से योग्य की परंपरा है। अपितु वर्तमान समय में योग एक विस्तृत रूपरेखा तैयार की है इसका श्रेय माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाता है। उस समय मानसिक तनाव और स्वच्छता का कोई विशेष प्रश्न ही नहीं था। निहितार्थ यह है कि विश्व के अधिकतर देशों में जब भी कोई समस्या खड़ी होती है, तब समाधान हेतु प्रयास प्रारंभ किए जाते हैं, जबकि भारतीय ज्ञान परंपरा में समस्या खड़ी ही ना हो या खड़ी भी हो तो समाधान उपलब्ध हो। इस विशेषता के कारण भारतीय ज्ञान न सिर्फ भारत के लिए अपितु संपूर्ण विश्व के लिए आवश्यक है।

**भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020:–**

इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा की विभिन्न स्तरों पर समावेश की अनुशंसा की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्रस्तावना में लिखा है–

"प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा विद्यालय के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन करना मात्र नहीं बल्कि आत्मज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था।"

प्रस्तावना के अंत में नीति के उद्देश्य के संदर्भ में लिखा है की नीति का विजन छात्रों में भारतीय होने का गर्भ भरना है, केवल विचारों में नहीं, बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्य में भी और साथ ही ज्ञान, कौशल, मूल्य और सच में भी होनी चाहिए। इसी तरह छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास एवं चरित्र–निर्माण तथा सभी स्तरों पर, यथा पाठ्यक्रम, शिक्षण–अधिगम, परीक्षा–मूल्यांकन, शोध आदि में समग्रता की दृष्टि (होलिस्टिक एप्रोच) की बात कही गई है। साथ ही, भारतीय संवैधानिक एवं नैतिक मूल्य, स्वदेशी, स्थानीय भाषा, कला– कलाकारी, परंपरा के समावेश तथा भारतीय संस्कृति, खेल एवं कला के एकीकरण की बात कही गई है। इस प्रकार की अनेक अनुशंसाएं राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के प्रारूप में दी गई है।

तथ्य है कि पिछले लगभग एक दशक से देश में पुनः चर्चा प्रारंभ हो गई है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा को प्राथमिकता देने के बाद इसको अधिक गति मिल गई है और इस हेतु सकारात्मक वातावरण भी बना है।

**भारतीय ज्ञान परंपरा के शिक्षा में समावेश हेतु योजनाः–**

भारतीय ज्ञान परंपरा के शिक्षा में समावेश हेतु हमारे शिक्षा संस्थाओं को व्यापक कार्य योजना बनाने की आवश्यकता है–

- भारतीय ज्ञान परंपरा की समझ बढ़ाने एवं पाठ्यक्रम में समावेश की पूरी तैयारी हेतु व्यापक स्तर पर संगोष्ठी, संवाद, तर्क–वितर्क, कार्यशाला इत्यादि का आयोजन किया जाना चाहिए।
- विषयों अथवा संकायों एवं वर्गों के अनुसार भी इस प्रकार के आयोजन अधिक उपयोगी हो सकते हैं।

**पाठ्यचर्या मैं भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेशः–**

प्रत्येक विषय की पाठ्यचर्या में उसे विषय के भारतीय इतिहास को रखा जाए इसके लिए संबंधित विषयों की पुस्तक का प्रथम पाठ उसे विषय के भारतीय इतिहास का रखा जा सकता है। इस तैयारी के समानांतर यह भी अपेक्षित है कि जिन शास्त्रों और विषयों में भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुरूप अध्ययन सामग्री पहले से उपलब्ध है, उसका उपयोग किया जा सकता है। हर विषय वस्तु में भारतीय ज्ञान परंपरा के समय बेस पर कार्यशालाएं आयोजित करने के उपरांत साहित्य तैयार करके पाठ्यक्रम में सभी स्तरों पर समावेश करने की प्रक्रिया प्रारंभ की जा सकती है।

पाठ्यक्रमों में समग्रता लाने के लिए विद्यालय से लेकर उच्च शिक्षा तथा भारतीय ज्ञान परंपरा पर एक आधार पाठ्यक्रम सभी छात्रों के लिए अनिवार्य किया जाना चाहिए सभी स्तरों के पाठ्यक्रमों को पंचकोश की आधारभूत संकल्पना को आधार बनाकर पाठ्यक्रम तैयार किए जाने की आवश्यकता है। प्राथमिक से लेकर शिक्षक–शिक्षा, स्नातक,परास्नातक आदि के

पाठ्यक्रम पंचकोश आधारित तैयार किए जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। यह भी चिंता की बात है कि हमारे शिक्षा संस्थानों में अनेक दशकों से विकृत एवं विसंगति पूर्ण तथा अधिक संख्या में आक्रांतों का इतिहास पढ़ाया जा रहा है। उसे बदलना प्राथमिकता का एक विषय है। इसके साथ ही आज पाठ्य पुस्तकों में अधिक मात्रा में राजनीतिक इतिहास को ही पढ़ा जाता है। राजनीतिक इतिहास के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, धार्मिक इत्यादि का इतिहास के पाठ्यक्रम में समावेश हो। इस प्रकार के इतिहास के पाठ्यक्रम में भौगोलिक संतुलन के साथ–साथ जनजाति एवं पहाड़ी क्षेत्र का इतिहास भी पढ़ाया जाना चाहिए। इस प्रकार सभी विषयों के संदर्भ में विचारणीय होगा कि पाठ्यक्रम के स्वरूप भारतीय ज्ञान परंपरा के स्वरूप तैयार करनी होगी।

विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों में पाठ्य पुस्तकों में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश में कुछ समय लग सकता है। परंतु कम अवधि के पाठ्यक्रम तुरंत प्रारंभ किया जा सकते हैं। उदाहरण स्वरूप वैदिक गणित, चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर्यावरण की भारतीय दृष्टि वेदों का अध्ययन, भारतीय कला एवं स्थापत्य, कौटिल्य का अर्थशास्त्र व राजनीतिक शास्त्र, उपनिषद का अध्ययन, योग, दर्शन का अध्ययन किया जा सकता है। इस प्रकार के पाठ्यक्रम, प्रमाण पत्र, क्रेडिट कोर्स एवं डिप्लोमा के रूप में प्रारंभ किया जा सकता है।

**भारतीय भाषाओं की शब्दावली का उपयोगः–**

पाठचर्चा और पाठ्य पुस्तकों में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश का एक प्रमुख मार्ग भारतीय शब्दावली का उपयोग है। प्रत्येक शब्द का एक अर्थ होता है, ऑर्थो के भाव होते हैं।उसके आधार पर जीवन दृष्टि का विकास होता है। परंतु कई शब्दों के अंग्रेजी अनुवाद से उसे उनके अर्थ बदल जाते हैं, अर्थ बदलने से भाव बदलते हैं और सही दृष्टि का विकास नहीं हो सकता। इस दृष्टि से जिन शब्दों का सही रूप में अंग्रेजी अनुवाद नहीं हो सकता, वैसे शब्द का अंग्रेजी में रोमन लिपि में यथावत प्रयोग करना चाहिए। जैसे भारत, धर्म, मोक्ष, संस्कृति आदि शब्दों को यथावत रोमन लिपि में लिखना। कुछ समय के बाद अंग्रेजी शब्द कोष्टक में लिखने की आवश्यकता नहीं रहेगी। इस प्रकार कल को समझने हेतु ए डी, बी सी आदि शब्दों के स्थान पर भारतीय कला की गणना के अनुसार शब्दों का प्रयोग विकसित करनी चाहिए।

**शिक्षण–अधिगम उपागमों का विकासः–**

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के स्तर पर हमें शिक्षणशास्त्र के भारतीय उपागम का विकास करना होगा। भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत विशेषतः उपनिषदों में अनेक शिक्षण– पद्धतियों की ओर संकेत है। साथ ही विभिन्न कथनों के अर्थ निकालने अथवा उनमें समन्वय करने की दृष्टि से अन्य को तंत्र युक्तियों की चर्चा की गई है। उपनिषदों में ज्ञान प्राप्ति हेतु श्रवण मनन और निदिध्यसन इन तीनों प्रकार की क्रियोओ का उल्लेख मिलता है। उपनिषदों में तो इसका अर्थ बहुत गहराई से दिया गया है परंतु सरलता से समझने के लिए एवं आज की व्यावहारिक दृष्टि से श्रवण यानी सुनना। आचार्य जो पढ़ता है, उसे एकचित्त होकर सुना और ग्रहण करना, मनन अर्थात जो सुना है उसे पर सतत एवं सातत्यपूर्ण ढंग से चिंतित करना। निदिध्यासन अर्थात जो सुना है, उसे पर हमने मनन किया है उसे आत्मसात करने की प्रक्रिया अर्थात आचार्य से जो सुना है, स्वयं ने उसका मनन किया है उसको व्यवहार में लाना चाहिए। हमें शिक्षण– अधिगम के स्तर पर इस तरह की भारतीय पद्धति का प्रयोग करना होगा। हम भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार पहले व्यावहारिक अनुभव देकर और बाद में सिद्धांत पढ़ा सकते हैं। इससे सिद्धांत को समझना बहुत सरल हो जाता है इसके साथ ही भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रतिमानो के विषयों के अनुसार छात्रों को दर्शन करने हेतु अध्ययन प्रवास का आयोजन किया जा सकता है उदाहरण के लिए, विद्यार्थी को दक्षिण के मंदिरों की वास्तुकला एवं मूर्ति कला दिल्ली का लोह स्तंभ, नालंदा विश्वविद्यालय एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय की धरोहर को दिखाकर इन प्राचीन विश्वविद्यालय आदि से परिचित कराया जा सकता है।

**नई शिक्षा नीति के प्रमुख सुधारः**

1. 4 + 4 + 2 + 2 संरचनाः (10+2)

नई शिक्षा नीति में 5 + 3 + 3 + 4 की संरचना बनाई गई है,

जिसमें

–5 वर्षों में आधारभूत शिक्षा।

–3 वर्षों में मिडिल स्कूल. की शिक्षा।

–3 वर्षों में हाई स्कूल की शिक्षा.

–4 वर्षों में सीनियर सेकेंडरी और उच्च शिक्षा।

यह संरचना बच्चों के शुरुआती विकास पर जोर देती है और उन्हें इसकी रुचियां के अनुसार पढ़ने का अवसर प्रदान करती है।

**परीक्षा एवं मूल्यांकन पद्धति का प्रयोगः**

शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी समस्या परीक्षा एवं मूल्यांकन की पद्धति है। इसी बात को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 360 डिग्री मूल्यांकन की बात कही गई है।365 दिवस का मात्र 3 घंटे की सैद्धांतिक परीक्षा द्वारा मूल्यांकन ना हो तो वैज्ञानिक और ना ही भारतीय पद्धति है। इसके परिहार के लिए सतत एवं समग्रता से मूल्यांकन करने की पद्धति विकसित करने की आवश्यकता है। इस हेतु औपचारिक परीक्षा के साथ–साथ छात्रों में व्यावहारिक ज्ञान जीवन कौशल शोध– नवाचार में योगदान नैतिक मूल्यों का अनुसरण सामाजिक कार्य से सहभागिता खेल कला आदि में योगदान इत्यादि विषयों की मूल्यांकन के द्वारा छात्रों का समग्रता से मूल्यांकन हो सकता है। विद्यालय स्तर पर आकलन के लिए तीन प्रकार के प्रश्न पत्र तैयार करके विद्यार्थियों की स्वयं प्रतिपुष्टि,अभिभावक की वैकल्पिक शब्द एवं उसके आचार्य की प्रतिपुष्टि को सम्मिलित कर सकते हैं।

**शोध अनुसंधान एवं नवाचारः**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मैं राष्ट्रीय विकास हेतु अनुसंधान के एक सशक्त पारिस्थितिकी तंत्र के विकास पर बोल दिया है। इस नीति में संस्तुति है कि –

आज किसी भी राष्ट्र के आर्थिक, बौद्धिक, सामाजिक, पर्यावरणीय और प्रौद्योगिकी की विकास के लिए शोध का महत्व पहले से बहुत ही अधिक बढ़ गया है।

इस संदर्भ में इस तथ्य की ओर विशेष ध्यान दिया गया है कि अनुसंधान भारतीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए यथा अपने सभी नागरिकों के लिए पीने का स्वच्छ जल, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा बेहतर परिवहन शुद्ध वायु, बिजली और आधारभूत चीजों की पहुंच के लिए व्यापक दृष्टि अपनाते हुए अनुसंधान भारतीय दृष्टि और आवश्यकता के अनुसार किया जाना चाहिए। अतः हमें व्यापक दृष्टि को अपनाते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न विषयों पर आज की आवश्यकताओं एवं भविष्य की दृष्टि के संदर्भ में शोध को बढ़ावा देना होगा हमें अनुसंधान की भारतीय दृष्टि का विकास करना होगा हम सुश्रुत की शॉलचिकित्सा, भारतीय काल गणना रामसेतु, वैदिक गणित, योग का प्रभाव, संगणक में संस्कृत को आधार मानकर भारतीय भाषाओं के आपस में अनुवाद हेतु सॉफ्टवेयर विकसित करना जैसे विषयों पर शोध को बढ़ावा दे सकते हैं। हमें शोध को मात्र सैद्धांतिक विषय तक सीमित नहीं रख नहीं रखता है। स्नातक अथवा स्नातकोत्तर स्तर पर शोध करने से पूर्व विद्यालय स्तर पर परियोजनाओं आदि की दृष्टि से इसका अभ्यास करना चाहिए, उसे शिक्षा के स्तर पर प्रमुख रूप से तीन बातों का विचार करने योग्य है–

स्नातक के प्रथम वर्ष से शोध का उन्मुखीकरण प्रारंभ करना

शोध मातृभाषा में हो इसका प्रावधान एवं प्रोत्साहन की योजना बनाना चाहिए।

शोध कार्य में सिद्धांत के साथ–साथ व्यवहारी कार्य के एवं नवाचार आधार पर उपाधि देना चाहिए।

**कौशल विकासः**

शिक्षा के मूलतः तीन आधार है – ज्ञान, चरित्र एवं कौशल। भारतीय परंपरा में क्वेश्चन को सदैव उच्च दर्जा दिया गया है। देश के विभिन्न राज्यों के प्रत्येक क्षेत्र चाहे शहर हो गांव हो, कस्बा हो, जनजाति, अनुसूचित जाति, एवं अन्य जाति जो विशेष कर सुदूर पर्वतीय या वन क्षेत्र में निवास करते हैं। सभी जगह पर वहां की कलाकारी गिरी विशेष प्रकार की रही है और आज भी उपलब्ध है इस दृष्टि से स्थानीय कलाकारी कौशल का शिक्षण में समावेश करना जिससे उन क्षेत्रों के छात्र स्थानीय कृषि उद्योग व्यापार एवं वाहन की कलाकारी गिरी का कौशल सीखेंगे और रोजगार का भी निर्माण होगा। वर्तमान समय में इसी कौशल के ऊपर स्किल डेवलपमेंट का शिक्षण के साथ जोड़कर उनके कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण का प्रावधान किया है। कौशल एक अंतर आत्मा की उपज है जो व्यक्ति विशेष के रूप में वह चिन्हित होता है।

**व्यक्तित्व का विकासः**

व्यक्तित्व का समग्र विकास भारतीय शिक्षा का आधार बहुत लक्ष्य है। इसमें चरित्र निर्माण का भी झलक दिखती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कई स्थान पर इस विषय का उल्लेख किया गया है स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा के उद्देश्य के संदर्भ में कहा था "मैन मेकिंग एवं कैरक्टर बिल्डिंग"। इसी युक्ति को अनेक विद्वानों ने अपने–अपने शब्दों में दोहराया है। जिस प्रकार कमजोर होने पर सुंदर सुदृढ़ और विशाल भवन का निर्माण नहीं किया जा सकता उसी प्रकार संस्कारहीन, मूल्यहीन, चरित्रहीन युवाओं से समृद्ध सशक्त राष्ट्र निर्माण की कल्पना असंभव है। छात्र–छात्राओं का चारित्रिक जी राष्ट्र का ही पतन है। उनका स्वचालित होना देश का उत्थान है मूलत रू तैत्तिरीयोंपनिषद में इस हेतु पंचकोश की संकल्पना दी गई है। उसको आधार बनाकर इसको सभी प्रकार के पाठ्यक्रम में जोड़ना चाहिए।

| पंचकोश | अर्थ |
|---|---|
| 1. अन्नमय कोष | शारीरिक विकास |
| 2. प्राणमय कोष | प्राणिक विकास |
| 3. मनोमय कोष | मानसिक विकास |
| 4. विज्ञानमय कोष | बौद्धिक विकास |
| 5. आनंदमय कोष | आध्यात्मिक विकास |

विषयों का आधार पंचकोषों पर आधारित चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास होना चाहिए। वर्तमान समय में इनकी ह्रास होते हुए देखी जा रही है। इसे पुनर्जीवित के लिए अध्यात्म ही सबसे बड़ा उपाय है। विद्यार्थियों में चारित्रिक गुना का विकास मात्रा सिद्धांत पढ़ने रखने से नहीं अपितु लोक व्यवहार में लाने से शिक्षा का लक्ष्य पूरा होगा। शिक्षा संस्करण का रोपण करती है जो शिक्षा संस्कार न दे सके, वह शिक्षा नहीं है। ज्ञान को व्यवहार में लाना आवश्यक। दुनिया को जानने से पूर्व स्वयं को जानना आवश्यक है। मैं कौन हूं,कहां से आया हूं,कहां जाना है, क्या करना है?

**अधिगम संसाधनों की उपलब्धताः**

मैकाले द्वारा दी गई शिक्षा– व्यवस्था के अंतर्गत अंग्रेजी लागू होने के पश्चात हमारे शैक्षणिक संस्थाओं के पुस्तकालय से क्रमशः भारतीय ज्ञान परंपरा की पुस्तक लुप्त होती गई। आज तो हमारे शैक्षिक संस्थानों में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं भारतीय भाषा की पुस्तक बहुत ही काम है या उपलब्ध ही नहीं है। भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनः हमारे शिक्षा व्यवस्था में समावेश करने हेतु हमारे पुस्तकालय में ज्ञान की पुस्तक के उपलब्ध होना आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परंपरा की

पुस्तकों की दृष्टि से हमारे प्राचीन ज्ञान, वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि के साथ–साथ स्वतंत्रता पूर्व 100–150 वर्षों में लिखी गई पुस्तकों में भी भारतीय ज्ञान परंपरा पर्याप्त है। इस प्रकाश प्राचीन से लेकर आधुनिक समय की भारतीय ज्ञान परंपरा की पुस्तक हमारी शैक्षिक संस्थानों के पुस्तकालय में उपलब्ध कराई जानी चाहिए। भारतीय ज्ञान परंपरा की पुस्तकों का क्रमशः सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद की व्यवस्था करना भी आवश्यक है। शैक्षिक संस्थानों में भारतीय ज्ञान परंपरा की पुस्तकों की प्रदर्शनी, कार्यशाला, संगोष्ठी,प्रोत्साहन का आयोजित करना जिसमें आज के छात्र उसको देख सके और उसमें पढ़ने की इच्छा भी जागृत हो सके। ऐसे भी पुस्तकालय को संस्थान का आत्मा कहा गया है।

**शिक्षा में आध्यात्मिकता का समावेश :**

प्रकृति को जानना समझना ईश्वर परमात्मा को जानना अनुभव करना अंतर्मन की सुनना सभी जीवो को परमात्मा के अंश को स्वीकार करना अध्यात्म है ।

भारतीय संस्कृति, दर्शन, तत्वज्ञान का एक शब्द में वर्णन करना है तो वह आध्यात्मिकता। यह सभी भारतीय मूल बहुत संकल्पनाओं का आधार है। स्वामी विवेकानंद ने इसकी व्यापकता और अनिवार्यता को ध्यान में रखते हुए कहा था कि–

"निरूस्वार्थ भाव से कार्य करना ही आध्यात्मिकता है। जो जितना निरू स्वार्थी है वह उतना ही आध्यात्मिक है।"

1949 में गठित डॉक्टर राधाकृष्णन आयोग ने भी शिक्षा में आध्यात्मिकता की अनुशंसा की थी।

**भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद के अनुसार –**

हमें केवल अपने राष्ट्र की अखंडता को ही सुरक्षित नहीं रखता है इसके साथ–साथ अपने संस्कृति परंपराओं को भी अक्षुणण रखना होगा। समय आ गया है जब आध्यात्म और विज्ञान का समन्वय हो। यह संबंध ही हमें आणविक युग में सुरक्षा प्रदान कर विकास की ओर उन्मुख कर सकेगा।

डॉ राजेंद्र प्रसाद जी का उक्त कथन आज की स्थिति में अधिक प्रासंगिक है। हमारी भाभी पीढ़ी इस और बड़े इसके लिए शिक्षा में सामाजिक कार्य के अनुभव विषय को अनिवार्य करना चाहिए। इससे उसे शिक्षा में छात्रों के विषय के साथ जोड़ना चाहिए उदाहरण के लिए सिविल इंजीनियरिंग का पाठ्यक्रम पढ़ने वाले छात्रों के गांव में रास्ता बनवाने, सीवर सिस्टम ठीक करने का कार्य किया जा सकता है कंप्यूटर इंजीनियर के छात्रों को गांव के छात्रों को तकनीकी ज्ञान सीखने का कार्य दिया जा सकता है। इलेक्ट्रिक के छात्र को बिजली संबंधी कार्य को सिखाने में। इसीलिए तो भारत सरकार ने कौशल विकास का कार्य बड़ी कुशलता से प्रारंभ की। समस्थानिक स्तर पर आवश्यक है कि विभिन्न विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय प्रबंधन संस्थान आदि शिक्षा संस्थानों में भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न विषयों के केंद्र स्थापित हो। उदाहरण स्वरूप मध्य प्रदेश सरकार के द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा हेतु एक राज्य स्तरीय शीर्षास्त्थ समिति का गठन किया गया है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़कपुर में भारतीय ज्ञान परंपरा का केंद्र स्थापित किया गया है। इसी प्रकार देश के अनेक विश्वविद्यालय एवं केंद्रीय संस्थानों में इस दिशा में कार्य प्रारंभ किए गए या किए जा रहे हैं। इस प्रकार व्यक्तिगत संस्थान भी भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास के लिए कंधों से कंधों मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

**शैक्षिक संस्थानों के परिवेश में भारतीयता :**

बदला सार्थक हो इसके लिए शैक्षिक संस्थानों की व्यवस्था में भारतीयता बोध का पोषण आवश्यक है। वर्तमान में हमारे शैक्षिक संस्थानों की अधिकतर व्यवस्थाएं और भारतीय है जो और वैज्ञानिक एवं स्वास्थ्य तथा पर्यावरण के लिए भी

अनुकूल नहीं है। दीक्षांत समारोह भारतीय परंपरा एवं वेश में हो। वार्षिक समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भारतीयता हो। व्यवस्था तंत्र में मानवीय पारिवारिक एवं भारतीय दृष्टिकोण आवश्यक है।

इस प्रकार शैक्षिक संस्थानों के पाठ्यक्रम से लेकर सारे अकादमिक कार्यों तथा संस्थाओं की व्यवस्थाओं एवं समग्र परिवेश में भारतीयता लाने की योजना पर कार्य करना होगा।

ऑनलाइन शिक्षण के महत्व को स्वीकार करते हुए और कोविड समय के दौरान इसकी क्षमता को देखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षकों की क्षमता निर्माण पर भी ध्यान केंद्रित करती है ताकि उन्हें प्रभावी ऑनलाइन शिक्षण के कौशल कि बारीकियां से लैस किया जा सके।

भारतीय ज्ञान परंपरा कोई ऐसी शब्दावली नहीं है जिसका अर्थ अभी नया नया प्रकट हो रहा है। जानकी यह परंपरा तो पहले से ही विद्यमान है, परंतु इस पर ठीक से ध्यान अब दिया गया है।

एक प्रकार से भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिकता के साथ समन्वय करके देश और दुनिया की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं चुनौतियां के समाधान कर सके इस प्रकार शिक्षा का स्वरूप बनाने का प्रयास शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश से संभव हो सकेगा।

"भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल में यह तथ्य निहित है कि मनुष्य के जीवन का मूल प्रयोजन उसे स्वतंत्रता की खोज है जिससे वह कर्म के बंधनों से अथवा जीवन और मृत्यु के बंधनों से सदा सर्वदा के लिए मुक्त हो जाता है। इस तरह से देखें तो पाएंगे कि भारतीय ज्ञान परंपरा मुक्त मुक्तिकामी ज्ञान की परंपरा का आश्रय लेकर चलती है"।

**सर्वे भवंतु सुखिनः**

भारतीय ज्ञान परंपरा में 'सर्वे भवंतु सुखिनरू सर्वे संतु निरामया' का सिद्धांत हो।जिसका अर्थ है कि सभी सुखी हो, सभी स्वस्थ हो। यह सिद्धांत हमारे शिक्षा नीति का आधार होना चाहिए, ताकि शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना ना हो, बल्कि समाज में सभी के लिए सुखहाली और स्वास्थ्य सुनिश्चित करना हो।

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता नहीं बल्कि एक समग्र दृष्टिकोण से व्यक्ति का विकास करना है। इसमें शारीरिक,मानसिक, सामाजिक, और आध्यात्मिक विकास शामिल है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसके लिए मार्ग प्रशस्त कर रही है–

येषा न विद्या न  तपो न दानं।
ज्ञानं न शीलं न गुणों न धमर्रू।

******